प्रयोजनमूलक हिन्दी : अवधारणा एवं स्वरूप

प्रयोजन शब्द का अर्थ है उद्देश्य और यहाँ प्रयोजन शब्द के साथ हिन्दी शब्द का प्रयोग है। स्पष्ट है कि प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य एक ऐसी हिन्दी है जिसका प्रयोग कुछ निश्चित उद्देश्य से एक खास रूप में और एक खास संदर्भ में किया जाता है। ऊपर शब्दों में कहें तो भाषा के रूप में जिस हिन्दी का प्रयोग विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया गया हो, वह हिन्दी प्रयोजनमूलक हिन्दी कही जाती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी वस्तुतः अंग्रेजी के 'फंक्शनल लैंग्वेज' का हिन्दी अनुवाद है। थोड़े खास शब्दों में कहा जाय तो यह हिन्दी कार्यालयी हिन्दी है जो सरकार के विभिन्न विभागीय कार्यालयों में प्रयोग की जाती है। वैसे तो भाषा का उद्देश्य संदेश ही माने और विचारों की अभिव्यक्ति होती है चाहे वह अभिव्यक्ति मौखिक हो या लिखित। पर इस सहज एवं प्राथमिक प्रयोग के अतिरिक्त भाषा कुछ निश्चित प्रयोजनों या उद्देश्यों की अभिव्यक्ति का भी माध्यम बनती है। गद्य में देवें भाषा या भाषा के शब्द अर्थ के रूपों को अभिव्यक्ति देते हैं। शब्द का एक कोशगत रूढ़िगत अर्थ होता है और खास संदर्भगत यानी शब्द संदर्भ के साथ जुड़कर अपने अर्थ को ध्वनित करते हैं। कई बार एक शब्द सामान्य रूप में सकारात्मक अर्थ रखता है, पर प्रयोग के स्तर पर नकारात्मक अर्थ में भी परिणत हो सकता है। ऐसे प्रयोजन विशेष के लिए प्रयोग में लायी जानेवाली हिन्दी प्रयोजनमूलक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भाषा या प्रयोजनमूलक हिन्दी बहुआयामी है। प्रयोजनमूलक भाषा में औपचारिकता अधिक होती है, इसमें भावप्रधान शब्दावली या शैली का प्रयोग का सर्वथा निषेध होता है। सामान्य बोलचाल की भाषा की तुलना में प्रयोजनमूलक भाषा का प्रयोग-क्षेत्र सीमित होता है और प्रयोजनमूलक भाषा कम से कम शब्दों में अपने आशय को प्रकट करती है।

ज्ञान और विज्ञान की बहुमुखी प्रगति के साथ ही हिन्दी के विविध प्रयोगात्मक और व्यावहारिक रूप विकसित हुए हैं। हिन्दी शासन की भाषा है, हिन्दी प्रशासन की भाषा है, हिन्दी साहित्य की भाषा है तो हिन्दी बाजार की भी भाषा है। हिन्दी तकनीक की भाषा है तो हिन्दी अनुवाद की भी भाषा है। हिन्दी संचार का माध्यम है तो हिन्दी जनसंचार की भाषा। हिन्दी राजभाषा है तो राष्ट्रभाषा भी है। इस तरह जीवन और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लायी जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिन्दी है। प्रयोजनमूलक भाषा व्यक्तिपरक होकर भी सार्वजनिक होती है और विशेष वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में सार्वभौमिक भी यानी अन्तर्राष्ट्रीय भी जाहिर है, प्रयोजनमूलक हिन्दी के इन विविध व्यावहारिक रूपों से है अभिप्राय हिन्दी के उन विविध रूपों से है जो सेवा-माध्यम के रूप में सामने आता है। विद्वानों ने प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप निर्धारित करते हुए उसके विभिन्न रूपों की व्याख्या की है और विभिन्न भाषा-प्रयुक्तियों की ओर संकेत किया है जो प्रभाव रूप में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित हैं—

(1) व्यापार की हिन्दी जिसमें मुख्य रूप से बाजार की भाषा यानी ग्राहक और विक्रेता के बीच की संवाद-भाषा। इसके तहत सर्राफा-बाजार की भाषा, शेयर-मार्केट की भाषा आदि भी समाहित हैं। जैसे यदि सोना का मूल्य बढ़ता है तो लिखा जाता है या बोला जाता है— "सोना चढ़ा" और यदि सोना का भाव गिरता है तो भाषा बनती है— "सोना लुढ़का"। ऐसी ही भाषा शेयर मार्केट के संदर्भ में भी प्रयोग की जाती है। यदि कोई दुकानदार अपनी दुकान बंद करके घर जा रहा है तो कहता है— "दुकान चढ़ा दिया"। इसी तरह काउंटर खुलने पर जो पहला ग्राहक खरीदारी करता है, उसके लिए विक्रेता एक शब्द का प्रयोग करता है— "बहुनी आ गई हैं"। इस तरह व्यापार-जगत के लिए हिन्दी के जिन शब्दों का प्रयोग होता है, वे शब्द का व्यापार-क्षेत्र के बाहर कोई अर्थ नहीं होता। इस तरह की शब्दावली व्यापारिक प्रयोजन के लिए उपयोग की जाती है, इसलिए यह भी प्रयोजनमूलक हिन्दी का ही एक रूप कहा जाएगा। इसमें बैंकिंग हिन्दी भी है।

(2) कार्यालयी हिन्दी का प्रयोग सरकार के विभिन्न विभागों के विभिन्न कार्यालयों में होता है। वस्तुतः यह हिन्दी प्रशासन की हिन्दी-भाषा है। जैसे— फाइल, अनुमोदन, अदालत, जमानत, हलफनामा, गवाही

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आवेदन, निविदा, अधिसूचना आदि। कार्यालयी हिन्दी की भाषा सूचनात्मक होती है, इसलिए यह अभिधा रूप में होती है। कार्यालयी भाषा व्यंजनात्मक नहीं होती, परन्तु इसमें एकार्थता का होना आवश्यक है।

(3) ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त हिन्दी से आशय है उस हिन्दी से जिसका उपयोग चिन्तन एवं सृजन के क्षेत्र में होता है। जैसे- काव्यशास्त्र, संगीतशास्त्र, दर्शनशास्त्र, योगशास्त्र, राजनीति, इतिहास, ज्योतिष आदि से जुड़े प्रसंगों में। यह हिन्दी अन्य क्षेत्रों की हिन्दी से स्वरूप, गुणात्मक और अर्थसंपन्न होती है। इस हिन्दी का आत्मसात्करण प्रबुद्धवर्ग ही करता है। वस्तुतः यह हिन्दी साहित्य को छोड़कर ज्ञान के अन्य अनुशासनों में प्रयोग की जाती है।

(4) तकनीकी हिन्दी का संबंध इंजीनियरिंग, प्रेस, फैक्ट्री, लघु कुटीर उद्योग जैसे बढ़ई, लुहार आदि के कार्य। विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में जिस हिन्दी का प्रयोग होता है, वह तकनीकी है। तकनीकी हिन्दी का व्यवहार विज्ञान से जुड़ी शाखाओं के क्षेत्र में भी होता है। यह सीमा है कि इस क्षेत्र में अधिकतर अंग्रेजी का प्रयोग होता है, पर हिन्दी ने भी अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करायी है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(5) साहित्यिक हिन्दी से तात्पर्य उस हिन्दी से है जिसका प्रयोग साहित्य की विभिन्न विधाओं में हो रहा है। कविता, कहानी, नाटक, आलोचना जैसी विधाओं में विचार-भावित और अर्थवाही भाषा का प्रयोग होता है। यह भाषा अलंकार, रस, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता से सज्जित होती है। यह भाषा साहित्यिक हिन्दी कहलाती है।

इस तरह प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग निरन्तर विस्तार लेता जा रहा है। एक ओर सरकारी कार्यालयों, बैंकिंग क्षेत्रों, व्यावसायिक क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग हो रहा है तो दूसरी ओर जनसंचार, विज्ञापन, तकनीकी, साहित्य आदि क्षेत्रों में विभिन्न प्रयोजनों में क्रियान्वयन में हिन्दी सहायक तत्व के रूप में योगदान दे रही है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner